दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL8**

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंक: 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Anil

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [ ] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): ____________

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: | | | | | | | |

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): ____________

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **Five** questions.*

*Candidate has to attempt all **FIVE** questions.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

व्याख्या में प्रसंग भी लिखें

प्रयास अच्छा है।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 131 1/2 टिप्पणी (Remarks): ____________

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीरदास के पदों के संग्रह 'कबीरग्रंथावली' से ~~लिया~~ गयी हैं इसका संपादन डॉ. श्याम सुंदर दास द्वारा किया गया है।

व्याख्या → कबीर गुरु की महत्ता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि गुरु ने मेरे नेत्रों को खोल दिया अर्थात् मुझे वास्तविक ज्ञान प्रदान कर दिया। गुरु का मुझ पर अनंत उपकार है कि उन्होंने मुझे ज्ञान प्रदान कर जगत अर्थात् ईश्वर का साक्षात दर्शन करा दिया। गुरु की कृपा है कि मैं माया~~की~~ रूपी बंधनों को तोड़कर ईश्वर के प्रति अनुरक्त हो सका और ईश्वर के प्रति सर्वस्व को समर्पित कर सका।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष → (क) गुरु की महत्ता का प्रतिपादन
(ख) ईश्वर से मिलन की तड़प को दर्शाया है।
(ग) भाषा सधुक्कड़ी है। जैसे - 'अनँत' शब्द पंजाबी, 'उघारिया' पूर्वी हिन्दी का शब्द है।
(घ) तुकबंदी का सुन्दर प्रयोग किया है। जैसे - उपगार, दिखावनहार।

थोड़ी और गहराई लाएँ।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप! निर्गुन-कंटक तें राजपंथ क्यो रुँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जू धौं।
बेद पुरान स्मृति सब ढूँढ़ौ, जुवतिन जोग कहूं धौं?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै ब्याज निबेरत उधो।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास द्वारा 'भ्रमरगीत' प्रसंग से ली गई हैं। आचार्य शुक्ल ने भ्रमरगीत प्रसंग का संपादन 'भ्रमरगीतसार' नाम से किया है।

व्याख्या ⇒ ~~गोपियों~~ ऊधो द्वारा गोपियों को निर्गुण ब्रह्म की उपासना की प्रेरणा देने पर, गोपियां ऊधो पर व्यंग्य करते हुए कहती हैं कि ऊधो तुम हमारा ~~ईश~~ कृष्ण प्रेम रुपी सीधे मार्ग को क्यों रोक रहे हो? ऊधो निर्गुण ब्रह्म की उपासना व्यर्थ अतः हम सगुण ब्रह्म की उपासना का त्याग नहीं कर सकते। ऊधो तुम्हें ~~ब~~ कुब्जा से सिखाकर भेजा है, या श्री कृष्ण ने उपदेश कहने के लिए भेजा है। हमने वेद पुराणों सभी में निर्गुण ब्रह्म को खोजा है, किंतु हमें निर्गुण ब्रह्म कहीं नहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मिला। ऊधो हमें दूध छोड़कर छाछ ग्रहण करने को कह रहे हो। सूरदास कहते हैं कि सगुण ब्रह्म की उपासना निर्गुण ब्रह्म की उपासना से कई गुणा अच्छी है।

विशेष ⇒ (क) हिंदी साहित्य में ऐसा व्यंग्य अन्यत्र कहीं देखने नहीं मिलता है।

(ख) गोपियों का विरह वर्णन अद्वितीय है। यदि नागमती विरह को छोड़ दिया जाए, तो संभवतः ऐसा वर्णन हिंदी साहित्य में अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा।

(ग) यह ब्रज का माधुर्य है, जो सूर के पद लोकग्राह्य हो गए।

(घ) ध्वन्यर्थ व्यंजना का सुंदर प्रयोग किया गया है।

(ङ) निर्गुण ब्रह्म के स्थान सगुण ब्रह्म की उपासना पर बल।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरै भौन में करत हैं, नैननु ही सों बात।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ बिहारी द्वारा रचित 'बिहारी सतसई' से ली गई हैं, जिसका संपादन पंडित जगन्नाथदास रत्नाकर ने किया है।

व्याख्या ⇒ बिहारी के नायक-नायिका की चेष्टाओं का वर्णन करते हुए कहते हैं कि नायक ने अपनी नायिका से संकेतों में कुछ कह दिया है। इससे नायिका क्रोधित हो गई है। इसके पश्चात दोनों एक-दूसरे के प्रति रीझ गए हैं, नयनों के माध्यम मिल रहे हैं तथा अंत लज्जा अनुभव कर रहे। नायक-नायिका भवन में बैठकर नेत्रों के माध्यम से ही प्रेम लीला कर रहे हैं।

विशेष ⇒ (क) बिहारी की ये पंक्तियां 'गागर में सागर' संबंधी उनकी उपमा को उचित सिद्ध करती हैं। यहाँ सात शब्दों के माध्यम से सात क्रियाओं को करवाया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) तुक लय का सुंदर प्रयोग किया है।

(ख) ध्वन्यर्थव्यंजना ने पद का सौंदर्य बढ़ाया है।

(घ) ~~भाष~~ ब्रज भाषा का सुंदर प्रयोग। जैसे- रीझत, रिबलत

(ङ.) बिंब का अद्वितीय उदाहरण है। इसका पाठकन कर ऐसा अनुभव होता है, जैसे कि एक पूरी चलचित्र देख ली हो।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'भारत भारती' से ली गई है।

व्याख्या ⇒ भारत के अतीत का सुंदर वर्णन करते हुए गुप्त जी कहते हैं कि भारत विश्व का गौरव है, यहाँ प्रकृति के मनोहारी रूप विद्यमान हैं। यहाँ हिमालय जैसा महान पर्वत तथा गंगा जैसी महान नदी प्रवाहित होती है, जिसका जल अमृत के समान है। विश्व के समस्त देशों में भारत का उत्कर्ष है। भारत ऋषिभूमि है अर्थात् यहाँ ज्ञान की सर्वप्रथम उत्पत्ति हुई है। गुप्त जी कहते हैं कि भारत विश्व में अद्वितीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में अतीत के प्रति रोमानी भाव दर्शाया गया है।

(ख) नवजागरणवादी चेतना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

(ग) भाषा के रूप में खड़ी बोली का सुंदर प्रयोग किया है।

(घ) तुकबंदी ने काव्य का सौंदर्य बढ़ाया है। जैसे - कहाँ, वहाँ।

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला द्वारा रचित ~~भावप्रधान~~ लंबी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से ली गई है।

व्याख्या → राम जब रावण को पराजित करने में असफल रहे, तो राम अपनी व्याकुलता का वर्णन करते हुए कहते है कि अंधकार छा गया है, जिसके कारण दिशाओं का बोध नहीं हो रहा है। बादल तीव्रता से गरज रहे हैं। पर्वत ऐसे ध्यान मग्न हो गया है जैसे जलती मशाल हो। अर्थात राम की सीता की मुक्ति की कोई ~~आशा~~ मुक्ति नजर नहीं आ रही है, उनके मन में अंधकार एवं भ्रम छा गया है। किंतु बीच-बीच में उनके मन में आशा की किरण भी उत्पन्न होती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) ईश्वर (राम) का मानवीकरण अर्थात् ईश्वर में भय, पराजय जैसे भावों की उपस्थिति।
(ख) प्रकृति के माध्यम से राम की मनः स्थिति का वर्णन।
(ग) विराट बिंब की उपस्थिति
(घ) नादात्मकता एवं ध्वन्यर्थ व्यंजना का सुंदर प्रयोग किया गया है।

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) पीछै लागा जाई था, लोक वेद के साथि,
आगे तैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यखण्ड कबीरदास के पदों के संकलन 'कबीरग्रंथावली' से लिया गया है, जिसका संपादन डॉ. श्याम सुंदर दास ने किया है।

व्याख्या ⇒ कबीरदास जी कहते हैं कि पहले वे माया में बंधे हुए थे इसलिए उन्होंने ईश्वर को ज्ञान मार्ग अर्थात् वेदों को पढ़कर प्राप्त करने का प्रयास किया, किंतु वह असफल रहे। कबीर कहते हैं कि ईश्वर की प्राप्ति की राह में जब वह आगे बढ़ गमन कर रहे थे, तब उन्हें सतगुरु मिले, जिन्होंने मेरे ज्ञान में वृद्धि की अर्थात् ज्ञान रूपी दीया प्रदान किया और उसी की सहायता से वह ईश्वर को प्राप्त करने में सफल रहे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष → (क) सतगुरु की महिमा का वर्णन।

(ख) ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने पर बल दिया गया है।

(ग) भाषा सधुक्कड़ी है। उन्होंने सभी भाषाओं के शब्दों को इस प्रकार घुला दिया है कि द्विवेदी जी ने उन्हें 'भाषा का डिक्टेटर' कहा है।

(घ) पाखण्डों पर चोट।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चंढ़ा असाढ़ गँगन घन गाजा। साजा बिरह दुंद दल बाजा।
धूम स्याम धौरे घन धाए। सेत धुजा बगु पाँति देखाए।
खरग बीज चमकै चहुँ ओरा। बुंद बान बरिसै घन घोरा।
अद्रा लाग बीज भुइँ लेई। मोहि पिय बिनु को आदर देई।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' के नागमती वियोग खण्ड से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ नागमती रत्नसेन के विरह में पीढ़ित है। वह कहती है कि असाढ़ का महीना आ गया है। आसमान में बादल छाने लगे हैं और आसमान से वर्षा होने लगी है। यह वर्षा ऐसी प्रतीत हो रही है जैसे कि आसमान से बीजों की वर्षा हो रही हो। वर्षा के परिणामस्वरूप भूमि आद्र हो गयी है अतः अब ~~लोगों~~ लोगों को बीज बोना चाहिए। नागमती कहती है कि वह कैसे बीच बो सकती है, उसका पति ही घर पर नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष → (क) इन पंक्तियों में नागमती के रानीपन को भुलाकर उसका साधारणीकरण किया गया है। यह विरह वर्णन किसी रानी का विरह नहीं बल्कि एक ग्राहस्थिक नारी का विरह है।

(ख) विरह वर्णन अद्वितीय है।

(ग) बारहमासा ऋतु वर्णन परंपरा का निर्वाह किया है।

(घ) दृश्य बिंब का उदाहरण है।

(ङ) ~~अवधी~~ अवधी का सौंदर्य अद्वितीय है।

(च) नादात्मकता का सुंदर प्रयोग किया गया है। जैसे - विरह दुंद दल बाजा।

5 1/2
10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जिसे तुम समझे हो अभिशाप, जगत की ज्वालाओं का मूल-
ईश का वह रहस्य वरदान, कभी मत इसको जाओ भूल।
विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पद्यखण्ड जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित आधुनिक महाकाव्य 'कामायनी' से लिया गया है।

व्याख्या ⇒ श्रद्धा मनु के भीतर आत्मचेतना जागृत करने के लिए कहती है कि ईश्वर सृष्टि का विनाश कर दिया है। यह ईश्वर का अभिशाप नहीं है बल्कि ईश्वर इसके माध्यम से संकेतों में कुछ व्यक्त करना चाहता है। ईश्वर ने इस सृष्टि का विनाश इसलिए किया है क्योंकि इस पृथ्वी चारों ओर विषमता व्याप्त है। लोगों को अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी संसाधन उपलब्ध नहीं है। श्रद्धा कहती है कि सुख-दुख मानव जीवन के दो अंग होते हैं अतः व्यक्ति को दोनों स्थितियों के लिए तैयार रहना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) समाज में विषमता समाप्त करने की बात कही गई है। अर्थात इन पंक्तियों में मार्क्सवाद का सीमित प्रभाव नजर आता है।

(ख) आनंदवादी दर्शन स्पष्टतः परिलक्षित होता है।

(ग) भाषा तत्समी होकर भी लयात्मकता को धारण करती है।

(घ) व्यक्ति ~~के~~ को हतोत्साहित करने की बजाय प्रेरणा प्रदान करती है।

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर जो? समाचार कछु पाए?
इक अति चतुर हुते पहिले ही, अरु करि नेह दिखाए।
जानी बुद्धि बड़ी, जुवतिन को जोग-सँदेस पठाए।।
भले लोग आगे के, सखि री ! परहित डोलत धाए।
वे अपने मन फेरि पाइए जे हैं चलत चुराए।।
ते क्यों नीति करत आपुन जे औरनि रीति छुड़ाए?
राजधर्म सब भए सूर जहँ प्रजा न जायँ सताए।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास द्वारा रचित भ्रमरगीत प्रसंग से ली गई हैं, जिसका संपादन आचार्य शुक्ल ने 'भ्रमरगीतसार' नाम से किया है।

व्याख्या ⇒ गोपियाँ ऊधो पर व्यंग्य करते हुए श्री कृष्ण की आलोचना करते हुए कहती हैं कि श्री कृष्ण ने मथुरा जाकर राजनीति ~~की~~ का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। श्री कृष्ण पहले ही बहुत चालाक थे और अब राजनीति सीखने के बाद अधिक चालाक हो गए हैं। उन्होंने इसी राजनीति से प्रेरित होकर ऊधो को हम निर्गुण ज्ञान प्रदान करने के लिए भेजा है। गोपियाँ कहती हैं कि भला हुआ कि कृष्ण हमारे को चुरा ले गए, ऐसे में हमारे पास निर्गुण ब्रह्म

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की उपासना के लिए कोई मन नहीं है। श्री कृष्ण अपना राजधर्म भूल गए और हमें सता रहे हैं अर्थात श्री कृष्ण गोपियों से मिलने के लिए नहीं आ रहे हैं।

विशेष ⇒ (क) विरह का सुंदर वर्णन।
(ख) व्यंग्य क्षमता अद्वितीय है। कबीर और निराला को छोड़कर अन्य किसी भी कवि के काव्य में ऐसी व्यंग्य क्षमता नहीं मिलती है।
(ग) व्रज का माधुर्य सुंदर है।
(घ) गोपियों के माध्यम से राजनीतिक कुटिलता ~~वर्णन~~ का भी वर्णन किया है।

4 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) शत घूर्णावर्त, तरंग- भंग उठते पहाड़,
जल राशि-राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ निराला द्वारा रचित लंबी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ निराला राम की मनः स्थिति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि राम में अत्यंत द्वंद्व है। राम का मन घूर्णन की चलायमान है ~~अर्थात~~ स्थिर नहीं है। वह प्रतिक्षण परिवर्तित हो रहा है। जैसे ~~जल~~ समुद्र में लहरें उभर समाप्त हो जाती है और बंधों को तोड़ देती है। वैसे ही राम का मन कभी लहरों के ऊपर उभर जोश से भर जाता है, तो कभी उनके मन में निराशा छा जाती है कि सीता का उद्धार संभव नहीं है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष → (क) राम के मानवीय रूप का प्रदर्शन।
(ख) राम के आंतरिक द्वंद्व का सुंदर वर्णन किया है।
(ग) आंतरिक मनः स्थिति का प्रकृति के प्रतीकों के माध्यम से वर्णन।
(घ) विराट बिंब की उपस्थिति।
(ङ) नादात्मकता एवं ध्वन्यार्थ व्यंजना का सुंदर प्रयोग।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) नैना नीझर लाइया, रहट बहै निस जाम।
पपीहा ज्यूँ पिव पिव करौं, कब रु मिलहुगे राम।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर के पदों के संग्रह कबीर ग्रंथावली से ली गई है, जिसका संकलन डॉ० श्याम सुंदर दास ने किया है।

व्याख्या ⇒ कबीर ईश्वर के विरह में हैं। वे अपने विरह का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ईश्वर से मिलन न होने के कारण उनकी आँखों से आँसू ऐसे गिर रहे हैं, जैसे रहट से पानी गिरता है। जैसे पपीहा पिव-पिव करता है, रहता है, वैसे ही ईश्वर के विरह में वह भी राम-राम कर रहे हैं। अतः वह ईश्वर की प्राप्ति के लिए सभी साधन अपना रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vtsion Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष ⇒ (क) भावनात्मक रहस्यवाद का सुंदर वर्णन है।

(ख) ईश्वर के प्रति विरह दर्शाया गया।

(ग) विभिन्न प्रतीको के माध्यम से आंतरिक मनः स्थिति का वर्णन। जैसे - विरह के वर्णन के लिए पपीहा का उदाहरण।

(घ) भाषा मधुरकारी है।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव-मानव को,
चैन कहाँ धरती पर, तब तक
शान्ति कहाँ इस भव को?
"जब तक मनुज-मनुज का यह
सुख-भाग नहीं सम होगा,
शमित न होगा कोलाहल,
संघर्ष नहीं कम होगा।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित खण्ड काव्य 'कुरुक्षेत्र' से ली गई है।

व्याख्या ⇒ युधिष्ठिर के प्रश्नों का उत्तर देते हुए भीष्म पितामह कहते हैं कि जब तक इस पृथ्वी पर शांति स्थापित नहीं हो सकती जब तक कि इसमें सभी व्यक्ति नैतिक कर्मों को महत्व न दें। भीष्म कहते हैं कि शुभ - अशुभ में भेद आवश्यक है। वे कहते हैं कि जब तक संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण नहीं होगा, तब तक इस पृथ्वी से अशांति और संघर्ष को समाप्त नहीं हो सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष → (क) मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव नजर आता है।

(ख) वर्तमान की गरीबी एवं नक्सलवादी जैसी समस्याओं के समाधान के लिए संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण की बात कही गई है।

(ग) भाषा ओज गुण को धारण करती है।

(घ) संवाद शैली का सुंदर प्रयोग किया है।

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) बिलग जनि मानहु, ऊधो प्यारे!
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहिं ते कारे।।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छबि उपजत, कमलनैन मनिआरे।।
मानहु नील माट तें काढ़े लै जमुना ज्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी सूर स्याम गुन न्यारे।।

संदर्भ → प्रस्तुत पद्यखण्ड सूरदास के भ्रमरगीत प्रसंग से लिया गया है, जिसका संपादन आचार्य शुक्ल ने 'भ्रमरगीतसार' नाम से किया है।

व्याख्या → गोपियाँ ऊधो पर व्यंग्य करते हुए कहती हैं कि ऊधो, मथुरा काजल की कोठरी के समान है, वहाँ जितने के व्यक्ति निवास करते हैं, सभी कुटिल बुद्धि के हैं। मथुरा से आया सुफलक का पुत्र भी काला था और वह भी कृष्ण को अपने साथ ले गया। अब ऊधो तुम मथुरा से आए हो और हमें निर्गुण ब्रह्म की उपासना की सीख दे रहे हो। गोपियां कहती हैं कि श्री कृष्ण के साथ जो भी रहता है, उसकी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

छवि में सुधार हो जाता है अर्थात उसके रंग में परिवर्तन हो जाता है। ऊधो तुम जमुना के इस ~~पार~~ पार क्यों आए हो? ऊधो तुम कृष्ण के माध्यम से वर्णन सुनकर ही नंद के गांव आए हो क्या? अतः ऊधो तुम हमें निर्गुण ब्रह्म की उपासना की सीख मत दो।

विशेष ⇒ (क) विरह वर्णन अद्वितीय है।
(ख) ~~ध्वनि~~ व्यंग्य क्षमता हिंदी के अन्य कवियों में देखने को नहीं मिलती है।
(ग) ~~ब्र~~ ब्रज का माधुर्य सुंदर है।
(घ) निर्गुण ब्रहम के स्थान पर सगुण ब्रहम की उपासना को महत्व दिया गया है।

भारतीय संस्कृति पर चोट

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) जौ रोऊं तौ बल घटै, हँसौं तौ राम रिसाइ।
मनंही माँहि बिसूरणां, ज्यूँ घुँण काठहि खाइ।।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर द्वारा रचित ~~दोहे~~ पदों के संग्रह कबीर ग्रंथावली से ली गई है। जिसका संपादन डॉ॰ श्यामसुंदर दास ने किया है।

व्याख्या ⇒ कबीर ईश्वर के विरह में पीडित हैं। और ~~और~~ कहते हैं कि यदि मैं ईश्वर के विरह में रोता हूँ, तो मेरा आत्मिक बल कम हो जाता है और यदि मैं हंसता हूँ, तो राम अर्थात ईश्वर मुझसे रिसा जाता है। अतः मैं अपनी भावनाओं को अपने मन में ही दबा लेता हूँ और ईश्वर का विरह मुझे भीतर ही भीतर व्याकुल कर रहा है।

पीड़ित

विशेष ⇒ (क) भावनात्मक रहस्यवाद का प्रयोग किया गया है।
(ख) भाषा सधुक्कड़ी है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) विरह का सुंदर वर्णन किया है।

(घ) उन्होंने ईश्वर की प्राप्ति के ~~वि~~ बाह्य आडम्बरों की बजाय आत्म ज्ञान को अधिक महत्व दिया है।

5½/10

या इस स्थान में प्रश्न या के अतिरिक्त कुछ लिखें।
ease do not write thing except the stion number in space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ अज्ञेय द्वारा रचित लंबी कविता 'असाध्यवीणा' से ली गई है।

व्याख्या ⇒ केशकम्बली जब वीणा को बजाने में सक्षम होता है, तो वह इस कृत्य के लिए स्वयं की प्रतिष्ठा नहीं करता बल्कि वह कहता है कि मैं तो स्वयं वीणा में डूब गया था और जो ध्वनि वीणा से निकली है, वह ध्वनि वास्तविकता में वीणा की ध्वनि नहीं है, जबकि वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
ase do not write
thing except the
stion number in
space)

ध्वनि परम तत्व अर्थात ईश्वर की अभिव्यक्ति। परम तत्व में ही सभी कुछ समाहित है, उसकी अनुमति के बिना इस जगत में कुछ भी संभव नहीं है।

विशेष → (क) बौद्ध दर्शन का प्रभाव नजर आता है।

(ख) कला की अभिव्यक्ति के लिए आत्मविलयन आवश्यक है।

(ग) व्यक्ति को कभी भी अपनी योग्यता का घमण्ड नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे अपनी योग्यता का मानव हितों में उपयोग करना चाहिए।

(घ) भावनात्मक रहस्यवाद का प्रभाव नजर आता है।

(ङ) छंद योजना टूटी है, किंतु लय एवं तुक को बनाए रखा गया है।

(च) भाषा सरल, सहज है।

6
10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह तृण था, जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी। इन असंगत शब्दों ने यथार्थ के निकट होने पर भी, मानों झटका देकर उसके हाथ से वह तिनके का सहारा छीन लेना चाहा, बल्कि यथार्थ के निकट होने के कारण ही उनमें इतनी वेदना-शक्ति आ गई थी। काना कहने से काने को जो दु:ख होता है, वह क्या दो आँखों वाले आदमी को हो सकता है?

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचंद के कालजयी उपन्यास गोदान से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ होरी जब बेहोश होता है, तो धनिया व्याकुल हो उठती है। धनिया ~~कहती~~ अपने मन में सोचती है कि वह निरंतर पराभाव में जीवन यापन करती है क्योंकि उसे हमेशा एक ही बात ने आत्मबल प्रदान किया कि उसके साथ उसका पति है। किंतु यदि उसका पति ही मर जाएगा, तो वह अपने ~~भी~~ जीवन को किसके भरोसे काटेगी। धनिया ~~अ~~ होरी की मौत के बारे में सोचकर अत्यंत व्याकुल है, वह गरीबी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

एवं पराभाव में जी सकती है, किंतु के बिना नहीं।

विशेष ⇒ (क) किसानों की दयनीय स्थिति का वर्णन।

(ख) भाषा हिन्दुस्तानी है अर्थात् हिन्दी एवं फारसी का मिश्रण।

(ग) लोक ~~उपम~~ उपमाओं का प्रयोग किया है। जैसे - 'काना को काना कहना',

(घ) वर्णनात्मक शैली को स्वीकार किया गया है।

(~~ङ~~)

4/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

सदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ श्रीयम साहनी की प्रसिद्ध कहानी 'चीफ की दावत' से ली गई है।

व्याख्या ⇒ चीफ के सम्मुख जब माँ का अपमान होता है, तो वह दुःखी होती है, किंतु जैसे ही उसे पता चलता है कि चीफ उसके गाने से प्रसन्न होकर उसके पुत्र की तरक्की करेंगे, वह अत्यंत प्रसन्न हो जाती है। वह अपने पुत्र की तरक्की की कामना करने लगती है। वह अपने अपमान को भूल जाती है तथा उसका मूल उद्देश्य अब फुलकारी का निर्माण करना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

है, जिससे उसके पुत्र को तरक्की प्राप्त हो सके।

विशेष → (क) वृद्ध वन की समस्या को उभारा गया है।

(ख) पुत्र की संवेदनहीनता एवं माता का वात्सल्य का सुन्दर समन्वय किया है।

(ग) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(घ) ये पंक्तियाँ पाठक में विरेचन जैसी ~~पंक्तियां~~ स्थिति उत्पन्न करती है।

5/6
10

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भविष्य की चिन्ता हमें कायर बना देती है, भूत का भार हमारी कमर तोड़ देता है। हममें जीवन की शक्ति इतनी कम है कि भूत और भविष्य में फैला देने से वह और भी क्षीण हो जाती है। हम व्यर्थ का भार अपने ऊपर लादकर रूढ़ियों और विश्वासों और इतिहासों के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं, उठने का नाम ही नहीं लेते, वह सामर्थ्य ही नहीं रही। जो शक्ति, जो स्फूर्ति, मानव-धर्म को पूरा करने में लगनी चाहिये थी, सहयोग में, भाई-चारे में, वह पुरानी अदावतों का बदला लेने और बाप-दादों का ऋण चुकाने की भेंट हो जाती है और यह जो ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर तो मुझे हंसी आती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचंद द्वारा रचित उपन्यास गोदान से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ मि० मेहता भारत में व्याप्त कुरीतियों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि भविष्य की चिंता हमें कायर बनाती है जबकि अतीत के संपर्क न होने के कारण दुःख होता है। मानव को जिस ऊर्जा का उपयोग मानव कल्याण के लिए करना चाहिए, वह उस ऊर्जा को अपनी रूढ़ियों, प्रथाओं को निर्वहन में व्यय करता है। अतः मानव को इन रूढ़ियों, प्रथाओं को त्यागकर मानव कल्याण को प्राथमिकता देनी चाहिए।

प्रसंग भी लिखें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष → (क) समाज में व्याप्त रूढ़ियों, प्रथाओं का विरोध

(ख) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(ग) सूत्र शैली का प्रयोग जैसे- भूत की मार हमारी कमर तोड़ देती है।

(घ) संवाद शैली का प्रयोग किया गया है।

(ङ) मानव कल्याण को प्राथमिकता।

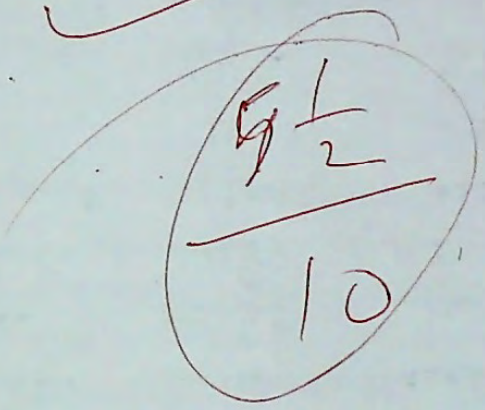

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) धनिया यन्त्र की भाँति उठी, आज जो सुतली बेची थी, उसके बीस आने पैसे लायी और पति के ठण्डे हाथ में रखकर सामने खड़े दातादीन से बोली-महराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचंद द्वारा रचित 'गोदान' नामक उपन्यास से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ होरी की जब मृत्यु हो जाती है, तब भी सांस्कृति परंपरा के निर्वाह के लिए उसे कहा जाता है। ऐसे में धनिया गाय का दान करने में अक्षम है। अतः वह पं. पंडित दातादीन को कुछ पैसे देकर प्रतीक के माध्यम से गौदान करती है। वस्तुतः प्रेमचंद ने इस प्रसंग को अत्यधिक मार्मिक बनाते हुए भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों एवं प्रथाओं पर चोट की है।

विशेष ⇒ (क) प्रेमचंद ने यथार्थवाद को अपनाया है।
(ख) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।
(ग) समाज में व्याप्त रूढ़ियों एवं प्रथाओं पर चोट की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गई है।

(घ) कृषक समुदाय की दयनीय स्थिति का वर्णन किया गया है।

(ङ) वर्णनात्मक शैली को अपनाया गया है।

(च) पाठक में विरेचन जैसी स्थिति पैदा करती है।

5 1/2

10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध निबंधकार हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित ~~कुटज~~ 'कुटज' नामक निबंध से ली गई है।

व्याख्या → प्रसाद जी कुटज नामक पौधे की विशेषता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मानव को इसी के समान जीना चाहिए, जो अपने अस्तित्व को बनाए रखने तथा अपने विकास को निश्चित करने हेतु कठोर पाषाण को भेद देता है और पाताल से पानी खींच लेता है और वायुमण्डल से वायु प्राप्त करता है। वह न केवल अपने अस्तित्व को बचाए हुए है, बल्कि आकाश में झूमकर उल्लास भी मना रहा है। अतः मानव को भी ऐसे जीवन के लिए प्रयास करना चाहिए।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) वर्णनात्मक एवं आत्मकथात्मक शैली को अपनाया है।

(ख) मानव को प्रतिकूल परिस्थितियों में जीने एवं विकास करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है।

(ग) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(घ) संवादों के माध्यम से कथानक का विकास हुआ है।

5½
10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) तो क्या ये मेरे मोटे होने के दिन हैं? मोटे वह होते हैं जिन्हें न रिन का सोच होता है न इज्जत का। इस जमाने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके तब एक मोटा होता है। ऐसे मोटेपन में क्या सुख? सुख तो जब है कि सभी मोटे हों।

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचंद द्वारा रचित 'गोदान' नामक उपन्यास से ली गई है।

व्याख्या ⇒ होरी जब होरी से उसके पतले होने की शिकायत करता है, तो होरी उत्तर देते हुए कहता है कि अब उसके मोटे होने के दिन समाप्त हो गए हैं अर्थात् वह प्रतीकों के माध्यम से गरीब किसानों की स्थिति का वर्णन करता है और कहता है कि उसे ऋण की चिंता है। मोटे वे होते हैं, जिन्हें न तो ऋण की चिंता न हो और न ही कोई और। होरी कहता है कि जो भी व्यक्ति मोटा है, उसने किसी न किसी गरीब व्यक्ति का शोषण अवश्य किया है। अतः मोटा सम्मान का विषय नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष → (क) संवाद शैली का प्रयोग।
(ख) सूदखोरों एवं पूँजीपतियों पर व्यंग्य।
(ग) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।
(घ) किसानों की दयनीय स्थिति का वर्णन।

6
10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नारी के प्रति अनुराग से, उसके आश्रय की कामना से ही पुरुष उसे अधीन रख कर उसे आत्म-निर्भर नहीं रहने देता। नारी प्रकृति के विधान से नहीं, समाज के विधान से भोग्य है। प्रकृति में और समाज में भी स्त्री तथा पुरुष अन्योन्याश्रय हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ यशपाल द्वारा रचित 'दिव्या' नामक उपन्यास से ली गई हैं।

व्याख्या ⇒ प्रस्तुत दिव्या से नारी के पराधीन होने के कारणों का वर्णन करते कहता है कि नारी प्रकृति के विधान से पुरुष के अधीन नहीं है, बल्कि पुरुष ने ऐसी सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का निर्माण किया है, जिसके कारण वह पुरुष के अधीन है। प्रकृति ने स्त्री-पुरुष को एक-दूसरे का पूरक बनाया तथा दोनों एक-दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष → (क) मार्क्सवाद का प्रभाव नजर आता है।

(ख) नारीवादियों का मानना है कि नारी को समाज ने दुर्बल बनाया है। इसी तथ्य की प्रतिष्ठा इन पंक्तियों में की गई है।

(ग) भाषा तत्समी होते हुए भी सहज, सरल एवं बोधगम्य है।

(घ) संवाद शैली का प्रयोग किया गया है।

(ङ) नारी स्वतंत्रता पर बल।

5½

10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अहंकारमूलक आत्मवाद का खण्डन करके गौतम ने विश्वात्मवाद को नष्ट नहीं किया। यदि वैसा करते तो इतनी करुणा की क्या आवश्यकता थी? उपनिषदों के नेति-नेति से ही गौतम का अनात्मवाद पूर्ण है। यह प्राचीन महर्षियों का कथित सिद्धांत, मध्यमा प्रतिपदा के नाम से, संसार में प्रचारित हुआ। व्यक्तिरूप में आत्मा के सदृश कुछ नहीं है। वह एक सुधार था, उसके लिये रक्तपात क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ जयशंकर प्रसाद के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक 'स्कंदगुप्त' से ली गई है।

व्याख्या → धातुसेन कहता है कि गौतम ने विश्व के कल्याण की कल्पना की थी। इसीलिए उन्होंने करुणा जैसे गुणों का प्रचार किया। धातुसेन सनातन धर्म और बौद्ध धर्म में समन्वय स्थापित करते हुए कहता है कि बौद्ध का आत्मवाद के वेदों से ही लिया गया है। वह हिन्दू - बौद्धों के बीच विद्यमान कटुता पर प्रहार करते हुए ~~कहते~~ कहता है कि दोनों धर्म में एक-दूसरे के विरोधी बन गए हैं। वास्तव में बौद्ध धर्म, हिन्दू धर्म का सुधार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मात्र चार।

विशेष → (क) इन पंक्तियों में धार्मिक समन्वय की बात की गई है।

(ख) नवजागरणवादी चेतना से पुष्ट है।

(ग) भाषा तत्सम होकर भी सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(घ) अतीत के प्रति रोमानी भाव।

~~(ङ) धार्मिक हिंसा का विरोध।~~

(ङ) धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा का विरोध।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) आज तक के वे भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच टुकड़े-टुकड़े होकर हमेशा घुटने ही टेकते आये हैं। हर बार दिनेश को लड़ाई के मैदान में ले तो ज़रूर गए हैं, पर जैसे ही गोलियाँ चली हैं, उसे वहीं छोड़कर भाग आये हैं- अकेला, निहत्था। वह गोलियों की बौछार से लहूलुहान होता रहा है और ये खुद एक असह्य अपराध बोध से। नहीं, और नहीं; अब तो वे चाहें तो भी शायद ऐसा नहीं कर सकते।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ ⇒ प्रस्तुत पंक्तियाँ मन्नू भण्डारी के प्रसिद्ध उपन्यास महाभोज से ली गई है।

व्याख्या ⇒ एस॰ पी॰ सक्सेना अपने अंतर्मन में ही एक घटना का वर्णन करते हुए कहते है कि उनके मन में हमेशा द्वंद्व की स्थिति रही है, जब भी उन्होंने कोई कठोर निर्णय लेने के बारे में सोचा, वह हमेशा मोह एवं लोभ के कारण ऐसा करने में सक्षम नहीं हो सके। 1942 में भी वह अपने प्राणों की रक्षा के लिए वह अपने मित्र दिनेश को गोलियों के सामने निहत्था छोड़ आए थे। मि॰ सक्सेना कहते है कि अब वह अपने अंतर्मन के अनुसार निर्णय लेंगे किसी बाहरी दबाव में नहीं।

प्रसंग भी लिखें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष ⇒ (क) इन पंक्तियों में मानव के भीतर निर्णय के संबंध में उत्पन्न होने वाले द्वंद्व का वर्णन है।

(ख) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(ग) राजनीति में व्याप्त अपराधीकरण, धनबल इत्यादि पर चोट।

(घ) व्यक्तित्व के विखण्डन जैसी समस्या को ~~भी~~ उभारा है।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) पंडित ने रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फंदे को खींचकर कस दिया। अभी कुछ-कुछ धुँधला-सा था। पंडित जी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गए। वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ → प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'सद्गति' से ली गई है।

व्याख्या → दुःखी चमार की तब पंडित के घर के बाहर काम करते हुए मृत्यु हो जाती है, तो कोई भी दलित उसकी लाश लेने नहीं आता। ऐसे में उसे छूना नहीं चाहता अतः वह रस्सी उसके पैर में डालकर ले जाता है। पंडित ऐसा कृत्य करने के कारण अपवित्र हो गया है अतः ऐसा मानकर वह दुर्गापाठ पढ़ता है तथा घर की पवित्रता हेतु द्वार में गंगा जल छिड़कता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒ (क) समाज में ~~व्याप्त~~ व्याप्त जातिवाद, अस्पृश्यता का वर्णन किया है।

(ख) दलितों में उभरती विद्रोह चेतना को भी दर्शाया गया है।

(ग) भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है।

(घ) इन पंक्तियों के माध्यम से प्रेमचंद ~~सर्वण~~ सवर्ण जातियों में विद्यमान दलितों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति का वर्णन किया है।

1/2
10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation